

अक्रम यूथ

मई 2022 हिन्दी

दादा भगवान परिवार

अपेक्षा



अनुक्रमणिका

04 अपने आप को परखें

15 सिक्रे का दूसरा पहलू

06 तुम भी भूल गए...?

19 नीरू माँ का निरपेक्ष जीवन

10 ज्ञानी विद् यूथ

21 यूथ अनुभव

12 अपेक्षा के परिणाम!

23 कविता

मई 2022

वर्ष : 10, अंक : 1

अखंड क्रमांक : 109

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात

फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org

website: youth.dadabhagwan.org

store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimplebhai Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at : Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription

India : 200 Rupees

USA: 15 Dollars

UK: 12 Pounds

5 Years Subscription

India : 800 Rupees

USA: 60 Dollars

UK: 50 Pounds

In India, D.D. / M.O. should be drawn
in favour of "Mahavideh Foundation"
payable at Ahmedabad.

© 2022, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय



प्रिय पाठक मित्रों,

मुझे पूरा विश्वास है कि अक्रम यूथ मैगज़ीन के माध्यम द्वारा हर महीने प्राप्त होने वाली समझरूपी चाबियाँ आपको परेशान करने वाली छोटी-बड़ी समस्याओं के ताले आसानी से खोलने में मददगार साबित होती होंगी।

इस महीने, ऐसी ही एक सुनहरी चाबी लेकर फिर से आया है अक्रम यूथ का नया अंक, जिसका विषय है 'अपेक्षा'। 'अपेक्षा' शब्द बहुत सरल है और हम सभी के जीवन में सहज ही गूँथा हुआ है। हम निरंतर ही किसी न किसी चीज़ की अपेक्षा रखते हैं या कोई न कोई व्यक्ति से अपेक्षा रहती है। सुबह जागने से लेकर रात को सोते समय तक माता-पिता, भाई-बहन, मित्र, टीचर्स, चीज़-वस्तु, वगैरह-वगैरह के साथ हमारी कुछ न कुछ अपेक्षा जुड़ी होती है और अगर हमारी अपेक्षा अनुसार न हुआ तो दुःखी होते रहते हैं।

प्रस्तुत अंक में संकलित की गई समझ को अगर प्रत्येक प्रसंग में याद रखें तो आप हमेशा आनंद में और सुख से रह सकोगे ऐसी 'अपेक्षा'... सॉरी, आशा रखने में मुझे कुछ गलत नहीं लग रहा है।
जय सच्चिदानंद!!!

- डिम्पलभाई मेहता

अपने आप को परखें

नीचे दिए गए सवालों के जवाब दीजिए।

1) मैंने अपने बेस्ट फ्रेंड को व्हाट्सएप मेसेज किया हो और ब्लू टिक भी हो गई हो, उसने मेसेज रीड कर लिया हो फिर भी रिप्लाई नहीं आए तो मैं डिस्टर्ब हो जाता हूँ और लगातार फोन चेक करता रहता हूँ।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

3) मेरे भाई, बहन या किसी फ्रेंड के साथ मेरा झगड़ा हुआ हो तो मन में ऐसा होता है कि उसे सामने से आकर मुझे सॉरी कहना चाहिए।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

2) सभी फ्रेंड्स मिलकर कुछ प्लान बना रहे हों और मुझे मेसेज ना करें तो मुझे दुःख होता है।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

4) जब मुझसे कुछ चाहिए होता है तब सभी मेरे साथ अच्छी तरह से बात करते हैं और फिर काम पूरा हो जाने पर भूल जाते हैं, इससे मुझे दुःख होता है।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

5) मुझे ऐसा लगता है कि रोज़ मम्मी मेरा मनपसंद खाना ही बनाए।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

6) कोई फ्रेन्ड या कलीग रास्ते में मिला हो और मेरे सामने देखे नहीं या रिस्पॉन्स न दे तो मुझे अच्छा नहीं लगता।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

7) मेरे बीमार होने पर फ्रेन्ड्स मेरी खबर नहीं पूछते तो मुझे उनसे शिकायत रहती है।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

8) एक्जाम का टाइम सुबह जल्दी हो और अगर कोई मुझे नींद से जगाए नहीं तो मुझे गुस्सा आता है।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

9) मैं अपने लिए अपनी कर्पैसिटी से बड़ा गोल सेट करता हूँ।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

10) जब किसी का व्यू पोइन्ट मुझसे अलग हो तब मेरी यह अपेक्षा रहती है कि मेरे फ्रेन्ड्स मेरा ही पक्ष लें।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

11) मेरी यह अपेक्षा रहती है कि मेरे नज़दीकी व्यक्ति मुझे समझें, मेरी कदर करें।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

12) मैं ग्रुप में बोल नहीं पाता हूँ लेकिन बोलने की इच्छा हो तब ऐसा लगता है कि कोई सामने से मेरा व्यू पूछे तो अच्छा हो।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

13) मुझे किसी काम का अच्छी तरह प्रेज़न्टेशन करना हो लेकिन जितना चाहिए उतना अच्छा नहीं हो पाता तो मैं डिस्टर्ब हो जाता हूँ।

कभी नहीं कभी-कभी हमेशा

अब जवाब का टोटल करें। (कभी नहीं = 10 points ; कभी-कभी = 5 points ; हमेशा = 0 points)

अब इस स्कोर को नोट डाउन करें। इस स्कोर से पता चलेगा कि आपको कहाँ, किससे, कितनी अपेक्षा रहती है।

तुम भी भूल गए?

“यहाँ तुम रो रहे हो... और वहाँ वह तुम्हें फोन पर फोन किए जा रहा है... कुछ तो हुआ है, राइट?”

“नर्थिंग पापा। लीव मी अलोन प्लीज़!”

“श्योर, टेक योर टाइम। लेकिन आर्य बेटा... श्लोक की फ्रेंडशिप जो तुम्हारी स्ट्रेन्थ है, देखना कहीं वह तुम्हारी विकनेस ना बन जाए!”

आर्य और श्लोक, बचपन के बेस्ट फ्रेंड्स! चाहे पढ़ाई हो या जन्मदिन की पार्टी, गेम्स हो या स्पोर्ट्स, पिकनिक हो या आउटिंग, सब में एक साथ रहते। दोनों ने एडमिशन भी एक ही कॉलेज में लिया था। एक तरफ आर्य पढ़ाई में और प्रोफेसर के साथ रिसर्च में बिजी हो गया था, तो दूसरी तरफ श्लोक कॉलेज के साथ-साथ पार्ट टाइम वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफी का कोर्स कर रहा था। इस कोर्स के दौरान श्लोक के नए-नए फ्रेंड्स भी बने थे। आर्य अपने फ्री टाइम में पढ़ाई के अग्र ज्यादा फोकस करता था। इसलिए उसके नए फ्रेंड्स भी कम बने थे लेकिन वह श्लोक के फ्रेंड्स के साथ ही घुल-मिल गया था। देखते ही देखते एक वर्ष बीत गया। कॉलेज के फर्स्ट इयर में आर्य ने युनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आर्य सबसे पहले अपनी खुशी श्लोक के साथ शेयर करना चाहता था।

“हे श्लोक! गेस वॉट?”

“कॉन्ग्रेट्स आर्य! मुझे तो पता ही था कि तुम टॉप करोगे। और बताओ, पार्टी कब दे रहे हो?” श्लोक ने पूछा।

“वेरी सून् दोस्त!”

आर्य पार्टी के लिए एक्साइटेट था। दो-तीन दिनों में रिसर्च का काम पूरा करके उसने खासतौर पर श्लोक के लिए वीकेन्ड में पार्टी का प्लान बनाया। सभी फ्रेंड्स को भी इन्वाइट किया और अंत में श्लोक को फोन लगाया। लेकिन श्लोक का फोन नहीं लग रहा था। दूसरी बार... तीसरी बार... हर बार एक ही जवाब, ‘यह फोन नेटवर्क कवरेज के बाहर है।’ थक हारकर उसने श्लोक के फादर

को फोन लगाया।

“अरे बेटा... श्लोक तो दो दिनों से वाइल्ड लाइफ कैम्पिंग टुर पर गया है! क्या तुम उसके साथ नहीं गए?”

“ओह! ओ.के.। नहीं अंकल, फोन रखता हूँ।”

आर्य उदास हो गया। पूरा दिन बीत गया पर श्लोक ने कॉल बैक नहीं किया। श्लोक के बिना तो पार्टी हो नहीं सकती, इसलिए आर्य ने सबको मेसेज करके पार्टी कैंन्सल कर दी। उसने श्लोक के फोन का बहुत इंतज़ार किया लेकिन उससे बात नहीं हो पाई। अब आर्य को बहुत गुस्सा आने लगा। मन में विचारों का बवंडर उठने लगा। दूसरे दिन सुबह श्लोक का फोन आया।

“सॉरी आर्य, कल तुम्हारे बहुत सारे मिसड कॉल थे... यहाँ सिग्नल बहुत खराब है।”

“तुम वहाँ फ्रेन्ड्स के साथ ट्रिप कर रहे हो और मुझे बताया भी नहीं? यहाँ मैं तुम्हारे लिए पार्टी दे रहा हूँ और तुम हो कि... तुम्हें मेरी खुशी की थोड़ी सी भी परवाह नहीं है? यार, कोई और भूल जाए तो ठीक है पर तुम ही भूल गए...?” आर्य का गुस्सा फूट पड़ा।

“अरे लेकिन अचानक प्लान... और मैं स्टडी ट्रिप में...” श्लोक कुछ एक्सप्लेन कर पाता उससे पहले ही आर्य ने फोन कट कर दिया और मोबाइल सोफे पर फेंककर अपने रूम में चला गया।

शाम को आर्य के मोबाइल पर एक के बाद एक तीन रिंग बजीं।

“ये लड़का भी... फोन यहीं छोड़कर

चला गया ... उसे रिंग की आवाज़ भी नहीं सुनाई दे रही।” आर्य के अपने कमरे से बाहर आने और फोन उठाने की राह देखते हुए, आखिरकार समीधभाई रविवार का समाचार पत्र एक तरफ रखकर खड़े हुए और फोन उठवाया।

“हेलो...”

“हेलो अंकल, आर्य है?”

“श्लोक बेटा... लगता है वह सो रहा है। एक मिनट फोन चालू रखना।” समीधभाई ने आर्य के रूम का दरवाजा खोलकर अंदर झाँका।

“आर्य बेटा... श्लोक का फोन है। आर्य... आर्य...”

आर्य ने आँखें खोलकर अपने पापा की तरफ देखा। समीधभाई ने फोन आर्य की तरफ बढ़ाया लेकिन उस ने फोन नहीं लिया और मुँह फेर लिया।

“वह... वह तो घोड़े बेच कर सो रहा है। जागने पर बात करवाता हूँ।” श्लोक का मन रखने के लिए समीधभाई ने उससे झूठ बोला।

“मुझे पता है अंकल... वह जाग रहा है। नेवर माइन्ड!” श्लोक ने फोन कट कर दिया।

समीधभाई आर्य के पलंग पर बैठे बेटे के सिर पर हाथ फेरकर पूछा, “बेटा, क्या तुम्हारा बेस्ट फ्रेन्ड के साथ कोई झगड़ा हुआ है?” आर्य ने सिर हिलाकर ‘ना’ में जवाब दिया।

“तो फिर ऐसे कब तक उसके फोन को अवॉइड करोगे। जो भी हो, एक बार उसके

साथ बात कर लो नो?"

आर्य ने आँसू पोंछकर करवट बदली। उसके भीगे हुए तकिये को देखकर समीधभाई ने मुस्कराते हुए कहा,

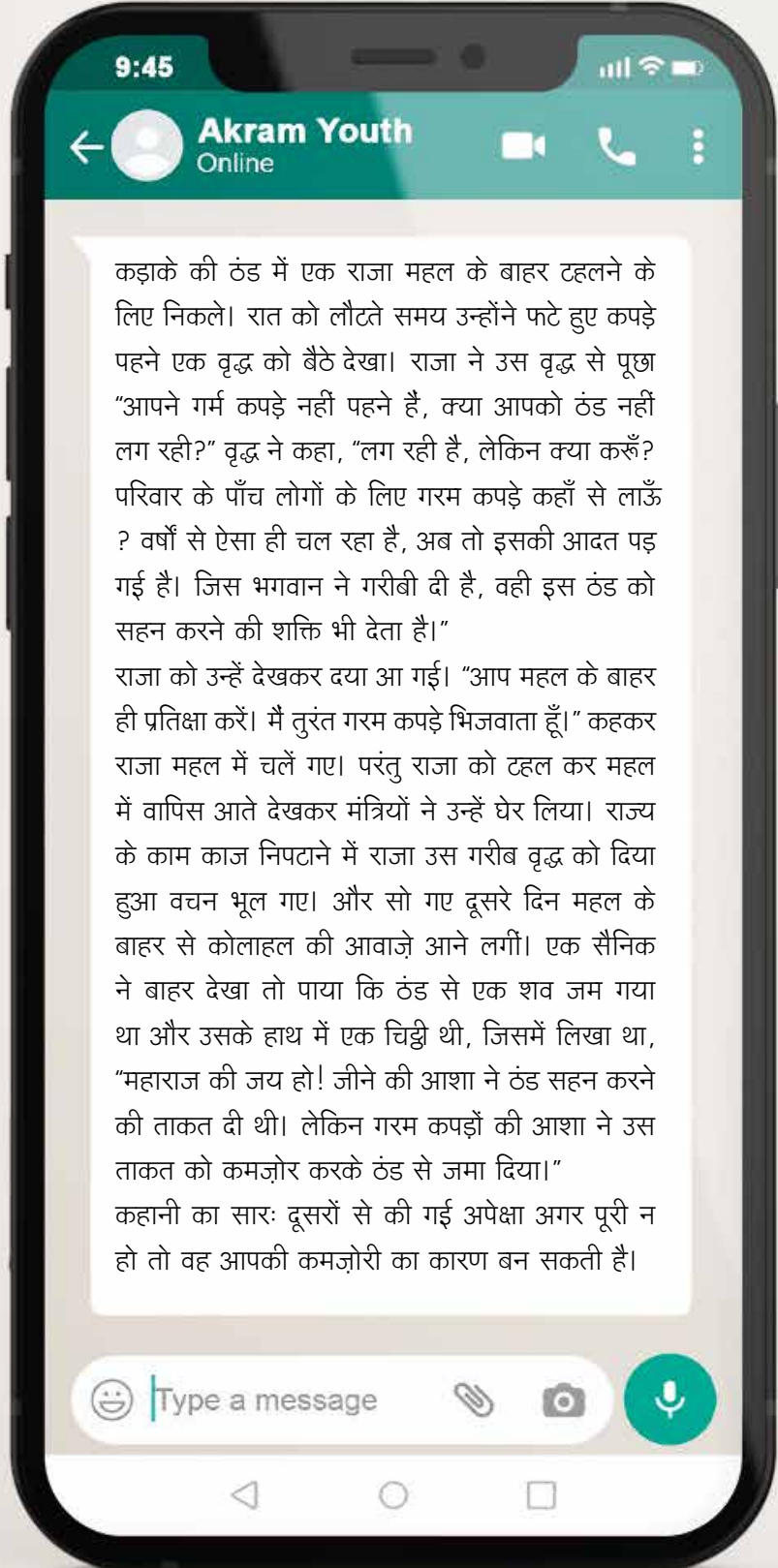
"यहाँ तुम रो रहे हो... वहाँ वह तुम्हें फोन पर फोन कर रहा है... कुछ तो हुआ है, राइट?"

"नथिंग पापा। लीव मी अलोन प्लीज!"

"श्योर, टेक योर टाइम। लेकिन आर्य बेटा... श्लोक की फ्रेंडशिप जो तुम्हारी स्ट्रेन्थ है, देखना कहीं वह तुम्हारी विकनेस ना बन जाए!" आगे बिना कुछ बोले समीधभाई रूम से बाहर निकल गए और धीरे से दरवाजा बंद कर दिया।

आर्य अपने पापा द्वारा कहे हुए शब्दों पर विचार कर ही रहा था तभी उसके फोन पर "टिंग" नोटिफिकेशन आया। उसके पापा ने मेसेज फॉरवर्ड किया था।

"आपकी स्ट्रेन्थ को विकनेस कौन बनाता है?... यह जानने के लिए पढ़िए यह शॉर्ट स्टोरी।" आर्य ने मेसेज खोला और आँसू पोंछकर पढ़ने लगा।



स्टोरी पढ़कर आर्य का मन स्थिर हुआ।

तभी स्वीटी कमरे में आई। “भैया... यह लो, मैंगो मिल्कशेक पी लो। वैसे तो मम्मी ने तुम्हारी मनपसंद सब्जी बनाई है लेकिन आज तो तुम्हें कुछ पसंद नहीं आएगा, राइट?”

छोटी बहन का प्यारा सा मज़ाक सुनकर आर्य को हँसी आ गई। उसने उठकर मिल्कशेक का ग्लास हाथ में लिया।

“पार्टी कैन्सल हुई... इट्स ओ. के... मेरा बर्थ डे आ रहा है... तब पार्टी दे देना!”

“ऑफ कोर्स स्वीटी... तुम्हारे आने वाले बर्थ डे पर मेरी तरफ से पार्टी होगी!” दूसरों को अच्छा फील कराने में खुद का मूड सुधर जाता है, ऐसा ही कुछ आर्य के साथ हुआ। उसका मूड काफी अच्छा हो गया और श्लोक के लिए गुस्सा भी कम हो गया। लेकिन इतना नहीं कि वह श्लोक के साथ बात करे।

ट्रिप से लौटने के बाद आर्य को मनाने के लिए श्लोक दो बार उसके घर गया। लेकिन दोनों बार बहाना बनाकर आर्य उससे नहीं मिला। एक सप्ताह बीत गया। आर्य अपने रीसर्च पर फोकस करने लगा। न तो वह किसी फ्रेंड से बात करता, न ही उनके साथ कहीं बाहर जाता। दिन-रात कॉलेज की लाइब्रेरी और लैब में ही समय गुज़ारता।

बिजी रहने से दुःख को भूलना आसान हो जाता है। आर्य भी थोड़ा नॉर्मल हुआ। एक बार वह देर रात को थककर घर लौटा। स्वीटी ने दरवाजा खोला। लेकिन रोज़ “हाऊ आर यू भैया?” कहकर हँसकर बात करने वाली स्वीटी आज दरवाजा खोलकर सीधा अपने रूम में चली गई। घर के बाकी लोग सो गए थे। डाईनिंग टेबल पर स्वादिष्ट खाना रखा था। आर्य हाथ धोकर खाना खाने बैठा। सामने रखे एक बाउल का ढक्कन खोला तो उसने देखा कि केक के एक टुकड़े पर “हैप्पी बर्थ डे स्वीटी!” लिखा हुआ था।

“ओह नो! मैं तो भूल गया। मैंने स्वीटी को पार्टी देने का प्रॉमिस किया था!”

तभी समीधभाई वहाँ आए और उसके कंधे पर हाथ रखकर बोले,

“बेटा! पार्टी की आशा में स्वीटी ने अपना पूरा दिन बिगाड़ा पर तुम अपनी फ्रेंडशिप क्यों बिगाड़ रहे हो?”

आर्य अपने पापा को ताकता रहा। समीधभाई की आँखें उससे कुछ कह रही थीं। उसने तुरंत ही श्लोक को मेसेज किया।

“सॉरी श्लोक... कल डबल पार्टी करें? कोई और नहीं... सिर्फ तुम, मैं और स्वीटी!”



ज्ञानी विद् यूथ



प्रश्नकर्ता : पूज्यश्री, फ्रेन्ड्स से कैसी और कितनी लिमिट तक एक्सपेक्टेडेशनस् रखनी चाहिए?

पूज्यश्री : ज़ीरो एक्सपेक्टेडेशन रखनी चाहिए और एक्सपेक्टेडेशन पूरी होने की आशा कभी नहीं रखनी चाहिए। किसी को कुछ देने का भाव रखना! हम क्यों भीख माँगे कि “मैंने तुम्हारे दस काम किए। तुम्हें मेरा एक काम तो करना चाहिए ना!” हम क्यों भीखरीपना करें?

प्रश्नकर्ता : लेकिन फ्रेन्डशिप में कहीं ना कहीं एक्सपेक्टेडेशनस् आ ही जाती हैं।

पूज्यश्री : हाँ, लेकिन अगर एक्सपेक्टेडेशनस् फूलफूल नहीं हों तो रेडी रहना चाहिए कि संयोगवश पूरी ना भी हों। मुझे क्लेश नहीं करना है। जब अपेक्षा पूरी ना हो सके तब झगड़ा नहीं करना चाहिए। यदि पापा को घर पर फोन करके कहा हो कि ‘मैं सात बजे तक घर आ जाऊँगी’ लेकिन रास्ते में ट्रैफिक के कारण लेट हो गया हो, ऐसा कभी होता है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ!

पूज्यश्री : उसके लिए पापा तुम्हें डाँटते हैं या समझ जाते हैं कि नहीं, ट्रैफिक के कारण लेट हो सकता है। अहमदाबाद का ट्रैफिक! अतः समझ जाते हैं कि नहीं, तुम्हारी भूल नहीं है। संयोगवश लेट हुआ है। तुमने कहा हो कि ‘मैं सात बजे तक घर आ जाऊँगी’ और सात बजे तुम नहीं पहुँचती हो तो घरवालों को झगड़ा करना चाहिए, मारना चाहिए या घर से निकाल देना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन फ्रेन्ड्स में कैसा होता है कि एक्सपेक्टेडेशनस् पूरी ना हो सके तो उसके प्रति



जीरो एक्सपेक्टेडेशन
रखनी चाहिए और
एक्सपेक्टेडेशन पूरी
होने की आशा कभी
नहीं रखनी चाहिए।
किसी को कुछ देने
का भाव रखना!

अभाव हो जाता है या गुस्सा आता है। ऐसा सब बहुत होता है।

पूज्यश्री : हाँ लेकिन, एक्सपेक्टेडेशन रखना वह तुम्हारी भूल है? या फिर उसने पूरी नहीं की तो उसकी भूल है?

प्रश्नकर्ता : एक्सपेक्टेडेशन रखना वह मेरी भूल है।

पूज्यश्री : तो फिर अपनी भूल सुधारो ना! और संयोगवश इस बार एक्सपेक्टेडेशन पूरी नहीं कर पाती है लेकिन पहले तो उसने दो-चार एक्सपेक्टेडेशनस् पूरी की होंगी ना?

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन जब एक्सपेक्टेडेशन पूरी नहीं होती, उस समय समझ में नहीं आता है।

पूज्यश्री : समझ में नहीं आता, तो अब समझ लो। आज यह ज्ञान मिला, तो अब जागृति रखो और पहले जहाँ-जहाँ अपेक्षा पूरी नहीं हुई हो, भाव-अभाव हुआ हो, भाव बिगड़े हों, उन सब के प्रतिक्रमण करना चालू करो। पूरा जीवन यही जागृति रखनी पड़ेगी। जहाँ अटैचमेन्ट होता है ना, वहाँ एक्सपेक्टेडेशनस् शुरू हो जाती है और एक्सपेक्टेडेशनस् पूरी नहीं हो पाएँ तो से झगड़ा हो जाता है, द्वेष हो जाता है, भेद पड़ जाता है। फिर घर में सास के साथ, पति के साथ, बहु के साथ और नन्द के साथ भी ऐसा होगा। सभी प्रकार की तैयारी रखना, क्या? शुरुआत फ्रेन्ड्स से करो और फिर मम्मी-पापा।

अपेक्षा के परिणाम!



गुरुजी को शिष्यों पर अत्यंत राग था। नियम है कि जिसके प्रति अत्यंत राग हो उसके प्रति अपेक्षा जन्म लेती है। अपेक्षा अर्थात् कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा।

अषाढाभूति नाम के एक गुरु थे। उनके कई शिष्य थे। एक बार उनके एक शिष्य बीमार पड़ गए और उनकी मृत्यु का समय नजदीक आ गया। अषाढाभूति गुरु को अपने शिष्यों से बहुत लगाव था। शिष्यों ने भी गुरुजी के पास से धर्म के पाठ सीखकर बहुत पुण्य कमाया था। इसलिए उनकी उँची गति होना तय था। जब शिष्य के अंतिम श्वास चल रहे थे तब गुरुजी ने उन्हें मंत्र सुनाया और कहा कि “वत्स, यदि तुम देवलोक में जाओ तो वहाँ से आकर मुझे धर्म का पाठ पढ़ाना और उर्ध्वगति में जाने का रास्ता बताना।”

शिष्य ने सिर हिलाकर ‘हाँ’ में स्वीकृति दी और वचन दिया कि “हाँ, मैं जरूर आकर आपसे मिलूँगा।”

शिष्य मृत्यु के बाद देवलोक में ही गए। लेकिन

वे देवलोक के भोग-विलास और सुख में डूबकर गुरु की बातें और गुरुजी दोनों को भूल गए। जबकि यहाँ गुरुजी अपने शिष्य की राह देखते रहे।

इस तरह एक के बाद एक गुरुजी के चार शिष्यों की मृत्यु हुई। सभी से गुरुजी ने यही वचन लिया कि वे देवलोक में से आकर उनसे मिलेंगे और धर्म की बात करेंगे। लेकिन वर्षों बीत गए, फिर भी उनमें से कोई भी शिष्य गुरुजी के पास वापिस बात करने या धर्म का पाठ पढ़ाने नहीं आए।

गुरुजी को शिष्यों पर अत्यंत राग था। नियम है कि जिसके प्रति अत्यंत राग हो उसके प्रति अपेक्षा जन्म लेती है। अपेक्षा अर्थात् कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा। यहाँ गुरुजी के मन में ऐसी अपेक्षा जागी कि

गुरुजी के चौथे शिष्य ने अवधिज्ञान द्वारा देवलोक से देखा कि गुरुजी ने साधुता छोड़ने का फैसला कर लिया है। गुरुजी के साथ ऋणानुबंध होने के कारण शिष्य को लगा कि गुरुजी को गलत रास्ते पर चलने से रोकना चाहिए।

उनके शिष्य देवलोक से आकर उनसे मिलें और उन्होंने शिष्यों को जो शिक्षा दी थी उसके बदले वे उन्हें उर्ध्वगति में जाने का रास्ता बताएँ। लेकिन सभी शिष्य अपनी-अपनी दुनिया में मशगूल थे और वे गुरुजी की अपेक्षा पूरी नहीं कर सके। जब अपेक्षा पूरी नहीं हो पाती है तो रिएक्शन में द्वेष उत्पन्न होता है। गुरुजी को भी अपने शिष्यों पर क्रोध आया। इतना ही नहीं, गुरु महाराज को धर्म के अग्र शंका होने लगी। जो गुरु शिष्यों को धर्म का पाठ पढ़ाते थे, उनका स्वयं ही धर्म के अग्र से विश्वास उठ गया। “यह सब काल्पनिक बातें हैं! पाप-पुण्य जैसा कुछ है ही नहीं। जप-तप सब बेकार के प्रयत्न हैं!” यह सोचकर उन्होंने साधुपना त्यागकर संसारी वेश अपनाने का फैसला कर लिया।

गुरुजी के चौथे शिष्य ने अवधिज्ञान द्वारा देवलोक से देखा कि गुरुजी ने साधुता छोड़ने का फैसला कर लिया है। गुरुजी के साथ ऋणानुबंध होने के कारण शिष्य को लगा कि गुरुजी को गलत रास्ते पर चलने से रोकना चाहिए। इसके लिए वे पृथ्वीलोक पर उतरे और जिस मार्ग से गुरुजी जा रहे थे वहाँ उन्होंने एक दैवी नाटक की रचना की।

देव ने सबसे पहले (6) छः मायावी बच्चों बनाएँ, जो जंगल से जाते हुए गुरुजी

को रास्ते में मिले। एकांत जंगल में सोने और हीरे के आभूषण पहने हुए बच्चों को देखकर अषाढाभूति के मन में लालच आ गया। साधुता छोड़कर संसार में जाने के लिए निकले तो थे परंतु संसार का खर्च कैसे चलेगा? यह प्रश्न उन्हें सता तो रहा ही था, तभी वहाँ उन नादान बच्चों के आभूषणों को देखकर वे विवेक भूल गए। उन्होंने बच्चों के गहने उतारकर अपनी झोली में छुपा लिए। अपना गुनाह छुपाने के लिए उन्होंने बच्चों को मार डाला और वहाँ से भाग गए।

देवकृत नाटक में आगे उन्हें एक साध्वी जी मिली। साध्वी जी ने उन्हें हिंसा, चोरी, झूठ आदि गुनाहों के भयंकर परिणामों के बारे में बताया और वीतराग धर्म की चर्चा की। इससे गुरुजी को अपनी गलती का अहसास हुआ और उनका मन कचोटने लगा।

आगे बढ़ने पर गुरुजी को एक बड़ी सेना मिली। जिसमें राजा-रानी और उनका परिवार था। धर्म में रुचि रखने वाले राज परिवार ने गुरु महाराज को देखा। धर्मलाभ पाने के उद्देश्य से उन्होंने गुरुजी को घेर लिया और उनसे दान-दक्षिणा लेने की विनती की। गुरुजी के मन में और ज्यादा पछतावा हुआ, “अरेरे, यह लोग एक साधु के तौर पर मेरा इतना सम्मान कर रहे हैं

और मैंने कैसा घोर पाप किया! अगर इन लोगों को मेरी हकीकत पता चलेगी तो साधुओं पर से इनका विश्वास उठ जाएगा।” यह सोचकर गुरुजी आनाकानी करके वहाँ से जाने लगे। लेकिन राजा ने उनकी झोली पकड़कर उन्हें रोकने का प्रयास किया। तभी अचानक उनकी झोली में से चोरी किए हुए गहने निकलकर बाहर गिर पड़े। गुरुजी थर-थर काँपने लगे। और उन्हें बहुत पछतावा हुआ वे अपने हाथों से मुँह छिपाकर रोने लगे।

गुरुजी का पश्चाताप देखकर देव प्रकट हुए और कहा, “गुरुजी, शांत हो जाइए। ये बच्चें, गहने, साधवी जी, सेना, राज परिवार यह सब एक दैवी नाटक था, हकीकत नहीं। मैं आपका चौथा मृतक शिष्य हूँ। मुझे पहचाना?” यह सुनकर गुरुजी थोड़ा शांत हुए।

“माफ कीजिए गुरुजी। मैं आपको दिया हुआ वचन भूल गया था। आपकी कृपा से हमें देवलोक का सुख मिला लेकिन वहाँ के भोग-विलास में हजारों वर्ष निकल गए और हम सब भूल गए। पुण्य-पाप, स्वर्ग-नर्क, मोक्ष सब सत्य है।”

अषाढ़भूति को अपनी गलती का अहसास हुआ। शिष्यों से अपेक्षा रखने के कारण धर्म पर से उनकी श्रद्धा जो उठ गई थी वह पुनः जीवित हुई। अपनी गलतियों का उन्होंने बहुत पछतावा किया और उन्होंने फिर से दीक्षा ग्रहण की। अँची भावना करते हुए उन्हें उसी जन्म में मोक्ष प्राप्त हुआ।

देखा मित्रों, जब हम किसी के लिए कुछ अच्छा करते हैं तो बदले में ‘उसे भी मेरे लिए ऐसा करना चाहिए’ ऐसी अपेक्षा रखते हैं। यह अपेक्षा हमें कहाँ से कहाँ ले जा सकती है। और इसमें कितना जोखिम है।





सिक्के का दूसरा पहलू

“मैं इतना सब करता हूँ पर इट्स नेवर इनफ़!” ऐसा आपको भी लगता होगा, राइट? कई बार कोई नज़दीकी व्यक्ति खासतौर पर आपके पेरेन्ट्स ने आप से अपेक्षा रखी हो और वह आपसे पूरी ना हो पाती हो, तो? ऐसे टाइम पर क्या करना चाहिए? चलो, जानते हैं।

प्रश्नकर्ता : मेरे पापा को मुझ पर बहुत राग है। उन्हें खुश करने के लिए मुझसे जितना हो सका मैंने किया। पढ़ाई में भी मैं आगे हूँ और हो सके उतना सब करता हूँ। पर मुझसे सब कुछ तो नहीं होगा ना! और जो मैं नहीं कर पाता उसके लिए मेरे पापा मुझे बहुत सुनाते हैं, तो मैं क्या करूँ?

पूज्यश्री : तुम क्या नहीं कर पाते?

प्रश्नकर्ता : मैं अभी बारहवीं कक्षा में हूँ और पढ़ाई में ज्यादा ध्यान दे रहा हूँ, इसलिए मेरा अधिकतर टाइम पढ़ाई में ही जाता है। पहले मैं तबला सीखता था, क्रिकेट भी खेलता था, लेकिन अभी पढ़ाई के कारण यह सब बंद करना पड़ा। तो अब पापा मुझसे ऐसा कहते हैं कि “यह सब करोगे तो अच्छा रहेगा।” जैसे

कि सात साल का कोर्स हो, मैंने पाँच साल ही किया हो तो पापा कहते हैं कि ‘दो साल के लिए क्यों छोड़ दिया?’ और मैं पापा से कहता हूँ कि ‘पापा, ज्यादा पढ़ना पड़ता था इसलिए!’ तो पापा मानने को तैयार ही नहीं होते और कहते हैं कि ‘तुम तो कुछ करते ही नहीं हो। देखो, ये लोग कितना अच्छा तबला बजाते हैं!’ ऐसे कम्पैरिज़न करते रहते हैं।

पूज्यश्री : पापा को कहना, ‘पापा! परिक्षा खत्म हो जाए तब वेकेशन में करूँगा।’ समाधान कर दो ना! वह उनका व्यू पोइन्ट है और बारहवीं की परीक्षा में कम मार्क्स लाओगे तो भी उन्हें नहीं चलेगा, खाना खाए बिना पतले हो जाओगे तो भी उन्हें नहीं चलेगा और थोड़ी तबियत बिगड़ेगी और तुम आराम नहीं

करोगे तो भी वे कहेंगे 'थोड़ा आराम करो!' इसलिए वे तुम्हारा सब तरह से ध्यान रखना चाहते हैं कि तुम ऑल राउन्डर बनो। अब हाफ राउन्डर अच्छा या ऑल राउन्डर?

प्रश्नकर्ता : ऑल राउन्डर अच्छा है!

पूज्यश्री : ऑल राउन्डर बनने के लिए पापा परवाह करते हैं तो उसे पॉज़िटिवली लो, 'हाँ पापा, ध्यान रखूँगा। पर अभी परीक्षा के दो महीने जरा ज्यादा मेहनत कर लूँ, क्योंकि यह बारहवीं की परीक्षा है। अच्छे मार्क्स और अच्छे परसेन्टेज आएँ, उसके लिए थोड़ी मेहनत कर लूँ। पापा, मैं पहले परीक्षा के लिए पढ़ाई करूँ या तबला सीखूँ?' तो वे खुद ही कहेंगे 'नहीं, नहीं, तुम पहले पढ़ाई कर लो।' फिर कहना, 'वेकेशन में मेरे पास फ्री टाइम है, उसमें मुझे स्टडी करनी ही है।' और बेस्ट फिर तुम यहाँ अडालज आ जाना। यहाँ भक्ति होती है ना, तब तुम तबला बजाना। आएगा ना तुमको? तबले लाए हो क्या साथ में?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

पूज्यश्री : अरे, लाना चाहिए ना! अपने पास

हैं? नवरात्री वाला नगाड़ा ढम-ढम बजता है, वह नहीं चलेगा, हाँ। तबला मतलब पता है ना? दो छोटे-छोटे होते हैं। वो बजाना, क्या? भक्ति भी होगी और पापा का समाधान करना। पापा भले ही ऐसा कहते हैं, लेकिन उनके दिल में तो ऐसा है कि तुम सब तरह से काबिल बनो। इसलिए तुम उनकी बात को पॉज़िटिवली लेना। हम क्यों उनका नेगेटिव देखें?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी ऐसा होता है कि मम्मी ने शाम का खाना बनाया हो है और पापा का मूड खराब हो, उन्हें गुस्सा आया हो, तो सब गुस्सा मम्मी पर निकालते हैं कि 'खाना क्यों ऐसा बनाती हो? नई-नई वेराइटी बनाओ!' मम्मी तो अपनी तरफ से उन्हें खुश रखने की कोशिश करती ही है लेकिन पापा खुश होते ही नहीं। बहुत कम ही ऐसा कहते हैं कि 'आज खाना बहुत अच्छा बना है।'

पूज्यश्री : इसमें कैसा है, कि सब राग-द्वेष के हिसाब वाला है। खाना तो निमित्त है, तुम तबला नहीं बजाते वो निमित्त है। तुम्हारा राग-द्वेष का हिसाब वह मुख्य चीज़ है। इसलिए जिस निमित्त से, जो कुछ भी बोला हो वह मुख्य कारण नहीं है। यदि तुम तबला सीख कर बजाने लगोगे ना, तो वे दूसरी बात को लेकर बोलेंगे।



प्रश्नकर्ता : वही तो बात है ना।

पूज्यश्री : अर्थात् क्या? खुद का ही हिसाब है, राग-द्वेष का। इसलिए सबसे अच्छा और अंतिम उपाय कहता हूँ कि मम्मी से कहना कि 'आप आत्मा का ज्ञान ले लो और पापा का प्रतिक्रमण करो।' ऐसा है कि उन लोगों को तुम्हारे अर राग है और राग में से अपेक्षा उत्पन्न होती है कि 'इसे ऐसा तो करना ही चाहिए ना।' और अपेक्षा कभी पूरी होती है और कभी नहीं भी होती है ना? अपेक्षा पूरी होना संयोगो के अधिन है, वह इंसान के काबू में नहीं है। और अपेक्षा पूरी नहीं होती है तो उसी व्यक्ति के प्रति द्वेष उत्पन्न होता है। यदि तुम तबला नहीं सीखते हो तो भी द्वेष होगा और दूसरा कुछ भी बिगड़े तो भी एकदम द्वेष हो जाता है। क्यों? क्योंकि अपेक्षा से विपरीत हुआ! और अपेक्षा क्यों थी? क्योंकि राग था। तुम्हें अपनी दृष्टि से क्या दिखाई देता है? 'मुझ पर क्यों गुस्सा करते हैं?' लेकिन तुम आगे का नहीं देख पाते कि पापा को तुमसे कितना लगाव है, राग है! तुम यह पॉजिटिव पहलू नहीं देख पाते। फिर नेगेटिव में पड़ जाते हो कि 'पापा तो बस! बात-बात पर किच-किच करते हैं!' वे वीतराग तो कैसे हो सकेंगे? समभाव कहाँ से लाएँगे? यह ज्ञान होगा तो समभाव में रह सकते हैं और वीतराग हो सकते हैं। इसलिए तुम्हें उनके राग में वीतराग रहना चाहिए, समभाव रखना चाहिए। वे अपेक्षा रखें तो तुम्हें कहना चाहिए, 'चलो, उन्हें आनंद हो ऐसा करूँगा।'

पापा को जिस बात से दुःख हुआ हो, भले ही तुम उसे सुधारने का प्रयत्न करो लेकिन अंदर प्रतिक्रमण करने से क्या होता है? कि उनके साथ तुम्हारा हिसाब खत्म होता जाता है। वह बात सुधरे या ना भी सुधरे लेकिन अगर तुम्हारा हिसाब पूरा हो गया हो ना, तो किसी भी बात से दुःख नहीं होगा। समझ में आया ना?

मन ही मन प्रतिक्रमण करना चाहिए कि "हे दादा भगवान! मैंने तबला सीखने का काम पूरा नहीं किया इसलिए पापा को जो दुःख हुआ है, उसकी माफी माँगता हूँ। मुझे क्षमा कीजिए। ऐसी भूल नहीं करने की शक्ति दीजिए। ऐसा हो कि उन्हें आनंद हो, ऐसी कृपा



कीजिए।” इससे आपका द्वेष का हिसाब पूरा होगा, फिर वे डौंटेंगे तो भी तुम्हें दुःख नहीं लगेगा। उनका व्यवहार भी सुपरफ्लुअस होगा क्योंकि हिसाब पूरा हो गया। मम्मी के साथ भी उनका हिसाब पूरा होगा तो गुस्सा कम हो गया होगा।

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसा लगता रहता है कि मैं उन्हें खुश करने की इतनी कोशिश करता हूँ फिर भी वे खुश नहीं होते। इसलिए हर बार मुझे भोगवटा आता है।

पूज्यश्री : इसके दो पहलू हैं। एक तो यह कि तबला सीखना अथवा दूसरा कोई भी कार्य हो, वह पूरा होना संयोगो के अधिन है। और दूसरा, राग-अपेक्षा ऐसे हैं कि तुम दस बात पूरी करोगे तो उन्हें पंद्रह की अपेक्षा होगी। तुम पंद्रह पूरी करोगे तो उन्हें बीस की अपेक्षा होगी। क्योंकि उन्हें राग है और राग जड़ से खत्म नहीं हुआ है। इसलिए तुम्हें क्या करना चाहिए? अपेक्षा के अनुसार प्रयत्न करो, अपेक्षा पूरी हो उसमें कोई हर्ज नहीं है। लेकिन साथ-साथ प्रतिक्रमण भी करो। इससे राग-द्वेष के हिसाब कम होंगे और

ऑटोमेटिक अपेक्षा कम हो जाएगी। फिर भोगवटा कम होगा। इसलिए उपाय इतना ही है कि उनकी अपेक्षा के अनुसार काम पूरा नहीं हो पाया हो तो प्रतिक्रमण करना। दूसरे (बाहर के) उपायों में जोर नहीं लगाना है, साधारण प्रयत्न करते रहना! कि चलो, टाइम होगा तो तबला भी सीखूँगा। पढ़ाई में थोड़ा रिलेक्सेशन चाहिए तब तबला बजा लेना। पापा सुनेंगे तो कहेंगे ‘ओहो! यह तो तबला बजा रहा है, अच्छा है।’ बट यू आर चेन्जिंग योर वर्क, ऐन्ड चेन्ज ऑफ वर्क इज रिक्रिएशन। समझ में आया ना? टी.वी., अखबार और मैगज़िन देखने के बजाय थोड़ी देर तबला बजा लेना, तो प्रैक्टिस भी हो जाएगी।

लेकिन इससे उनको सौ प्रतिशत समाधान होगा ही ऐसा नहीं है। क्योंकि मूल में राग है इसलिए दूसरी अपेक्षा, तीसरी अपेक्षा होती ही रहेंगी। तुम कितना कर पाओगे? इसलिए तुम प्रयत्न करते रहना पर उसके बजाय दिल में ऐसा रखना कि मुझे उनके प्रतिक्रमण करने हैं। राग-द्वेष में समभाव रखना है।





नीरू माँ का निरपेक्ष जीवन

1996 या 1997 की बात है। नीरू माँ को सत्संग के लिए दुबई जाना था। टिकिट ले ली थी परंतु वीज़ा मिलना बाकी था। एक भाई ने सामने से कहा था कि वे लोग वीज़ा भेज देंगे। लेकिन निकलने के अगले दिन तक वीज़ा नहीं मिला था। वीज़ा नहीं मिलने पर तो पूरी ट्रीप कैंसल करनी पड़ती। बहुत प्रयत्न करने के बाद सुबह 8 बजे वीज़ा मिला और दस बजे की फ्लाइट थी। इस तरह नीरू माँ दुबई पहुँचे।

वहाँ पहुँचकर जिनके यहाँ ठहरना तय किया गया था, उन्होंने कहा कि उनके यहाँ ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं है। विदेश पहुँचने के बाद ठहरने की व्यवस्था ना हो तो किसी को भी चिंता होना स्वाभाविक है! परंतु नीरू माँ को थोड़ी भी चिंता नहीं हुई या अपमान जैसा नहीं लगा। दूसरी तरफ आपुत्र भाई जिन्होंने सब व्यवस्था की थी वे सोच रहे थे कि नीरू माँ के ठहरने का क्या प्रबंध करेंगे? जितने भी पहचान वाले लोग थे उनसे भी कॉन्टेक्ट नहीं हो पा रहा था। ऐसे में किसी महात्मा के रिश्तेदार के यहाँ नीरू माँ के ठहरने की व्यवस्था हो गई। फिर नीरू माँ जिनके भी घर जाते, वहाँ छोटे से हॉल में लोगों

से मिलते, दादा की बातें करते और ज्ञानविधि में भी गिने-चुने लोग ही होते।

किसी भी प्रकार की अपेक्षा रखे बिना नीरू माँ ने जो ज्ञान बीज बोए थे उनके फल आज देखने मिल रहे हैं।

उस समय जिन्होंने ज्ञान लिया था, उनके द्वारा दादाश्री की पुस्तकें लोगों तक पहुँचीं। जिन्हें पढ़कर बहुत लोगों ने ज्ञान प्राप्त किया और आज दुबई एक बहुत बड़ा सेन्टर बन गया है।

ऐसी मुश्किलें सबके जीवन में आती हैं। हमारे जीवन में भी आती हैं, जब हमें मनचाहा रिसर्पोन्स ना मिले, सपोर्ट ना मिले और बहुत अडचनें आएँ। हम तब टूट जाते हैं, जबकि नीरू माँ की खुमारी वैसी की वैसी ही रहती है! चाहे कितनी भी मुश्किलें आएँ, रहने की जगह और खाना-पीना ठीक से मिला हो या ना मिला हो, एक ज्ञानी के रूप में नीरू माँ को कोई पहचाने या ना पहचाने, उनके चेहरे पर कोई फर्क नहीं दिखता! वैसी ही खुमारी से वे दादा का काम करते और साथ ही हर व्यक्ति के लिए उतना ही प्रेम होता! संपूर्ण निरपेक्ष जीवन!



“किसी भी प्रकार की अपेक्षा बिना का
जीवन!! वहाँ संपूर्ण शुद्धता होती है।
किसी भी प्रकार का दाग वहाँ नहीं होता।”
-दादाश्री



यूथ अनुभव

मैं पहले किसी के साथ जल्दी से बात नहीं करती थी। लेकिन एक बार जब मैं समर कैम्प में आई तभी से दीदी के साथ मेरी सबसे ज्यादा बातें होने लगीं। जैसे-जैसे दीदी के साथ परिचय बढ़ता गया वैसे-वैसे उनके पॉजिटिव दिखते गए। मुझे लगता कि दीदी मुझे समझती हैं, मेरी बातें सुनती हैं। फिर धीरे-धीरे मुझे ऐसा लगने लगा कि जब भी मैं दीदी के आस-पास रहूँ तब उन्हें मेरे साथ बात करनी ही चाहिए, मुझे बुलाना ही चाहिए, और अगर वे दूसरों के साथ बात करती तो मुझे इर्ष्या होती। मुझे इतनी ही इच्छा रहती कि कोई मेरे साथ अच्छी तरह बात करे और वह दीदी करती थी, इसलिए मुझे ऐसा लगा कि ये दीदी मेरे लिए ही हैं! फिर एक बार ऐसा हुआ कि दीदी मोबाईल पर बात करते हुए मेरे पास से ही निकलीं। उनका ध्यान मुझ पर नहीं था, इसलिए न तो उन्होंने मुझे बुलाया और ना ही मेरे सामने देखा। ऐसा दो बार हुआ तो मुझे बहुत भोगवटा आया। मन में बहुत गुस्सा आया कि 'अब मुझे दीदी के साथ बात ही नहीं करनी है!'

फिर मेरा भोगवटा बढ़ता ही गया। जब भी मैं दीदी को देखती तब मुझे याद आता कि उन्होंने मुझसे बात नहीं की थी। दूसरी तरफ मुझे रियलाइज भी होता कि मुझे इतना भोगवटा रहता है, बैचेनी होती है, शांति नहीं रहती लेकिन दीदी कितनी शांत दिखाई देती हैं! मैंने ही जानबूझकर परेशानी मोल ली है। एनालिसिस करने पर पता चला कि यह मेरी अपेक्षा है कि उन्होंने मुझे बुलाना ही चाहिए। फिर एक दिन मैं सामने से दीदी से मिलने गई तो देखा कि उनका व्यवहार तो पहले जैसा प्रेम वाला ही था। तब मुझे समझ में आया कि दीदी के लिए तो सभी एक समान होते हैं, उनके मन में ऐसा कुछ नहीं था।



Summer CAMP

For 17 to 21 years Youth Boys

29th April to 1st May

Theme: Goal + Sincerity

- 240+ YMHTians, Coordinators
- 11+ Centers



Adalaj, Trimandir

Dadanagar Convention Center



Log on to youth.dadabhagwan.org

22

मई 2022



कविता

अपेक्षाओं से भरी हुई है, जिंदगी आपकी-मेरी,
उसने ऐसा ही करना चाहिए, ऐसी इच्छाएँ मन की मेरी।

मम्मी, पापा या मित्रों के, अगर करते हैं कोई काम हम,
तो बदले की आशा, रखते हैं क्यों हम?

राग है जहाँ, वहाँ लगाव और अपेक्षा बढ़ जाते हैं बहुत,
पूरी ना होने पर द्वेष हो जाता है, और भेद पड़ जाता है तुरंत।

इंसान तो है संयोगों के अधिन, इतना समझ लेना,
पूरी न हो अपेक्षा, तो उसे दोषित मत मानना।

किसी पर अपेक्षा रखना भीख माँगने के बराबर है,
रखी जो अपेक्षा तूने, तो इसमें तेरी ही तो भूल है।

ना हों Expectations पूरी, तो रुद्रहू हू कर देना,
हुआ जो कुछ भी, उसे एडजस्ट हो कर स्वीकार कर लेना।

अपेक्षाएँ हो जाएँ शून्य, एक के बाद एक कम करते जाएँ,
भाव न बिगाड़ें किसी के प्रति, ऐसे ज्ञान सेट करते जाएँ।

नहीं होती है प्रेम में अपेक्षाएँ कभी, और ना ही प्रेम होता है सापेक्ष,
जीवन हो तो ज्ञानियों जैसा, अहो, कैसा निरपेक्ष!



दादा के युवाओं द्वारा

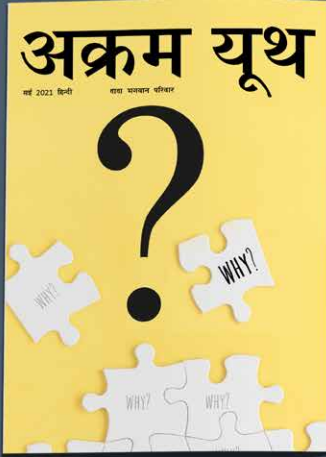


मई 2022

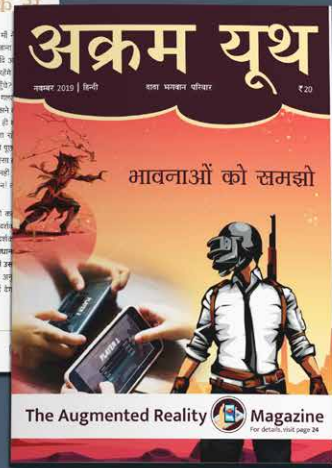
वर्ष : 10, अंक : 1

अखंड क्रमांक : 109

जरूर पढ़ें



नवंबर 2019



मई 2021

For Free download,
visit www.akramyouth.org



Scan Here

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.